RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

12th HISTORY

ARJUN BATCH

औपनिवेशिकता और देहात

अध्याय-9 | भाग-2

20 अगस्त 2026 || 04:00 PM



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

mg missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

उपनिवेश
औपनिवेशवाद

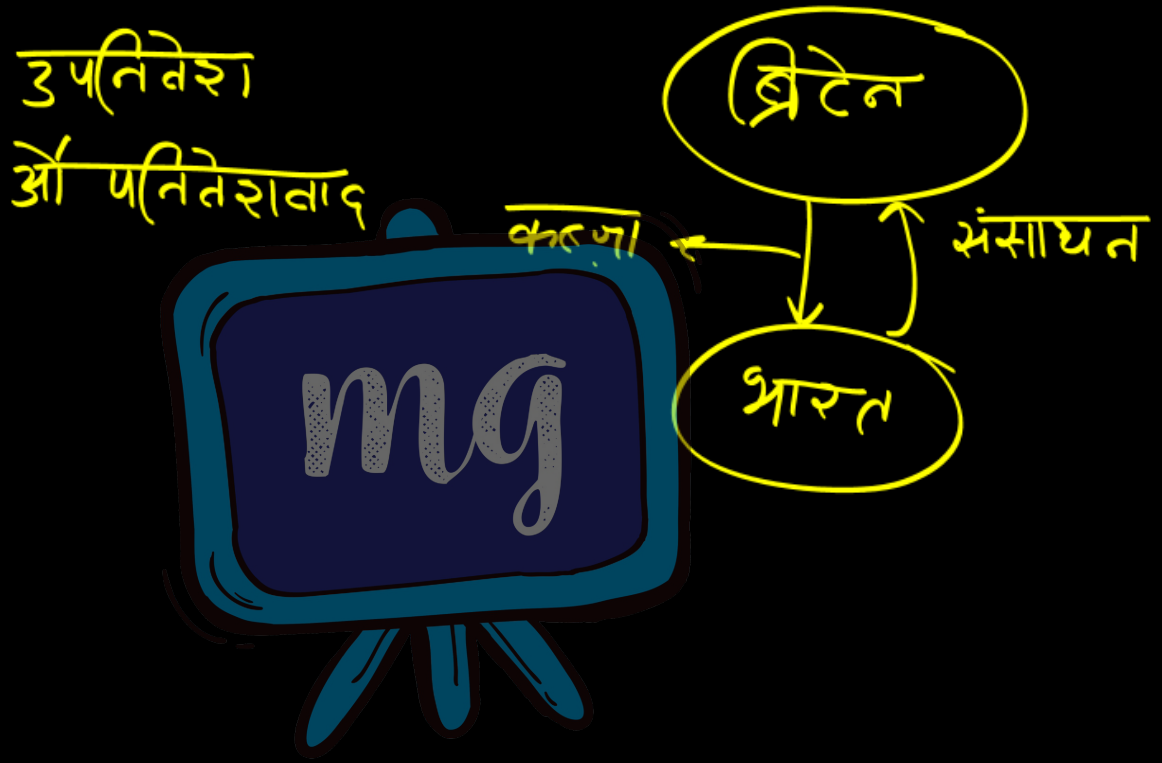

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

इस्तमरारी बंदोबस्त
(स्थायी बंदोबस्त)



1. **बंगाल और वहां के जमींदार :-**

जमींदारी व्यवस्था क्यों लागू की गई ?

- अंग्रेज (ईस्ट इंडिया कम्पनी) राजस्व से प्राप्त आय को निश्चित करना चाहते थे।
- जमींदारों के पास कृषि में सुधार करने के लिए पूंजी और उद्यम दोनों होंगे।
- जमींदार वर्ग कंपनी के प्रति वफादार बना रहेगा।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

mg missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

कंपनी अधिकारियों की सोच

- ज़मींदार में सुरक्षा का भाव।
- वे निवेश करेंगे।
- राजस्व भरने में कोताही क्यों

जमींदारों की असफलता के कारण

1. प्रारम्भिक मांगें बहुत ऊँची थी।
2. यह ऊँची मांगें 1790 के दशक में लागू की गयी थी, जब कृषि की उपज की कीमतें नीचीं थी।
3. राजस्व असमान था (अकाल)
4. प्रारम्भ में जमींदार की शक्ति को रैयत से राजस्व इकट्ठा करने और अपनी जमींदारी का प्रबंध करने तक ही सीमित कर दिया था। स्थानीय न्याय और स्थानीय पुलिस की व्यवस्था करने की शक्ति छीन ली गयी थी।

Q. जमीदारों के प्रति कम्पनी की क्या सोच थी?



OR

Q. अंग्रेजो द्वारा जमीदारी व्यवस्था लाने के क्या कारण थे?

Q2. जमीदारो की असफलता के क्या कारण थे?

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

अंग्रेज राजस्व FIX ↑

1790

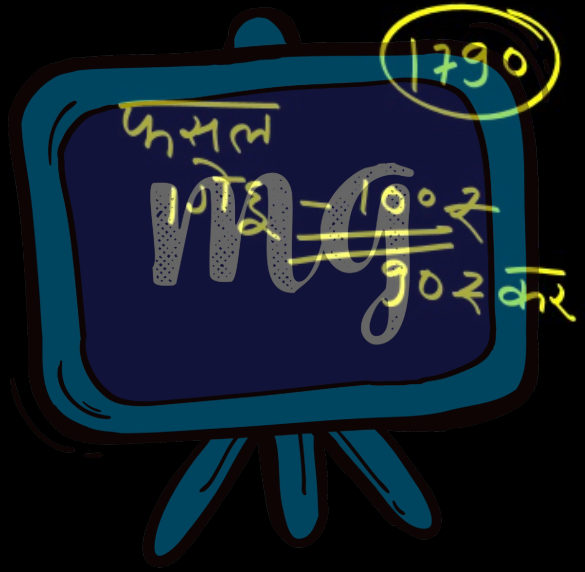

1795
कृषि ↓
80₹ / 70₹
90₹

बर्दवान का राजा



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

mg missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



जमींदार की ओर से प्रतिरोध ?

- जमींदारी/भू-संपदा की संभावित नीलामी की समस्या से निपटने के लिए जमींदारों ने नयी रणनीतियां बनायी।

1. फर्जी बिक्री - जैसे बर्दवान में की गयी नीलामी की घटना।
2. नए जमींदार को जमीन का कब्जा नहीं देते थे।
3. पुराने रैयत नए जमींदार का विरोध करते थे।

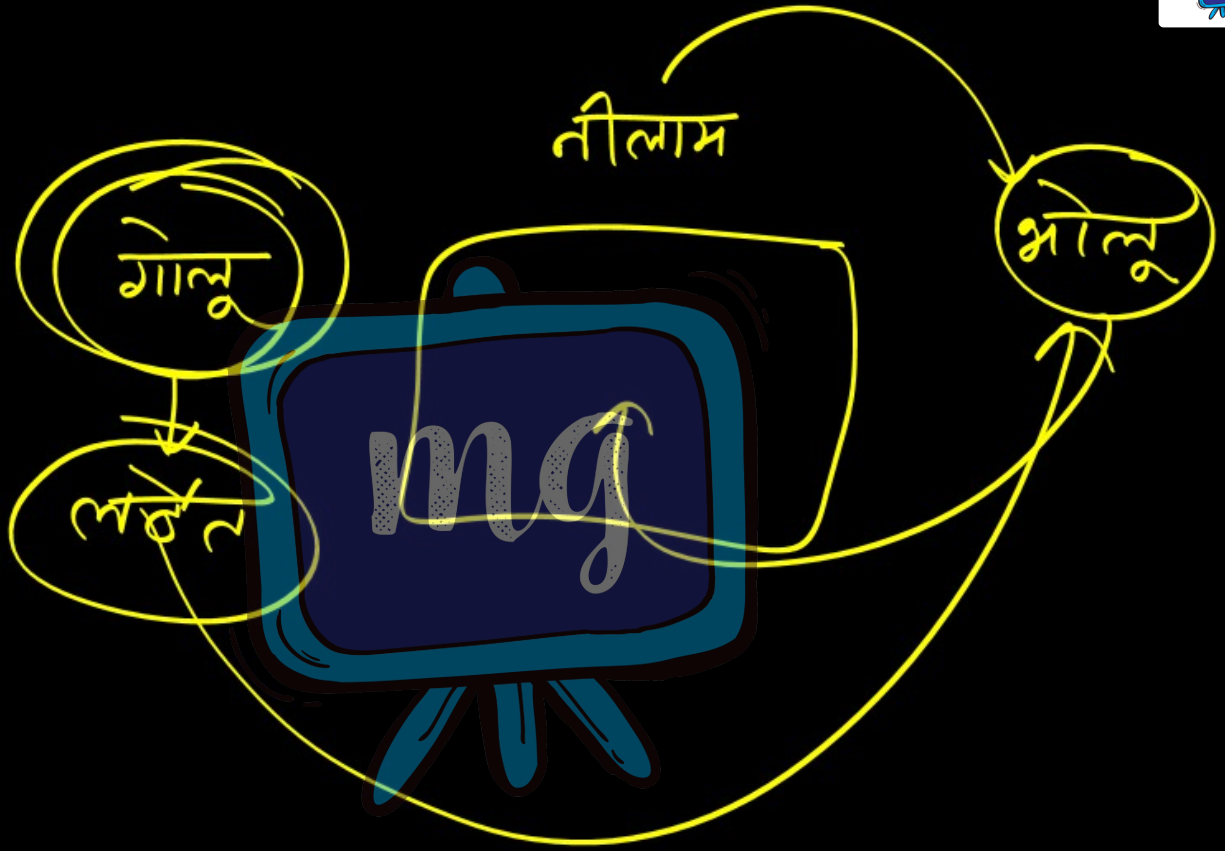
नीलाम
गोलू
भोलू
mg

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



- 19वीं शताब्दी के प्रारम्भ में मंदी की स्थिति समाप्त हो गयी। * नियम लचीला
- इसके बाद जमींदारों ने सत्ता को सुदृढ़ बना लिया।

1830 मंदी → जमींदार ↓
जोतदार ↑

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

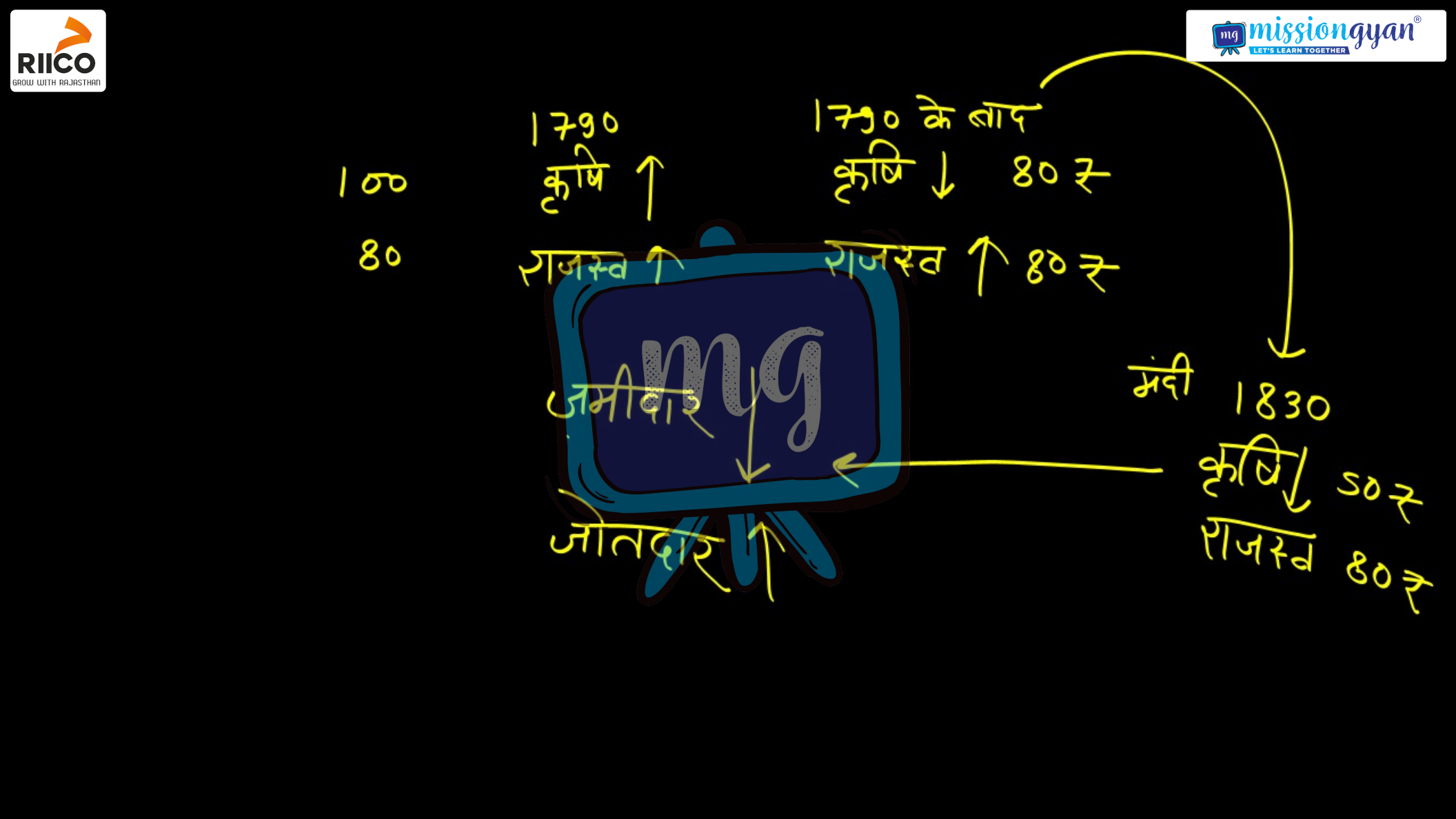

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

mg missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

18वीं शताब्दी → धनी किसान (कर्ज) साहूकार + महाजन → ज़मींदार से अधिक शक्तिशाली



अन्य नाम

- पंटीदार ✓
- हवलदार ✓
- मण्डल ✓

- गांव मे रहते थे
- अमीदारों का प्रतिरोध
- रैयतों को एकजुट
- ज़मींदारी खरीद लेते थे।

जोतदार

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

9. जोतदार पर एक लेख लिखें।

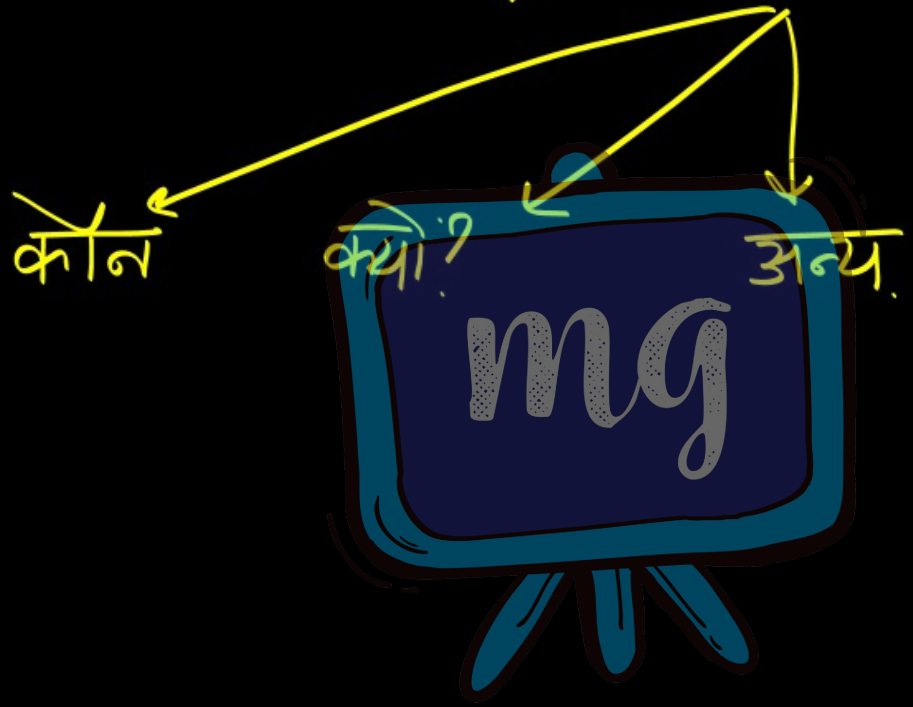

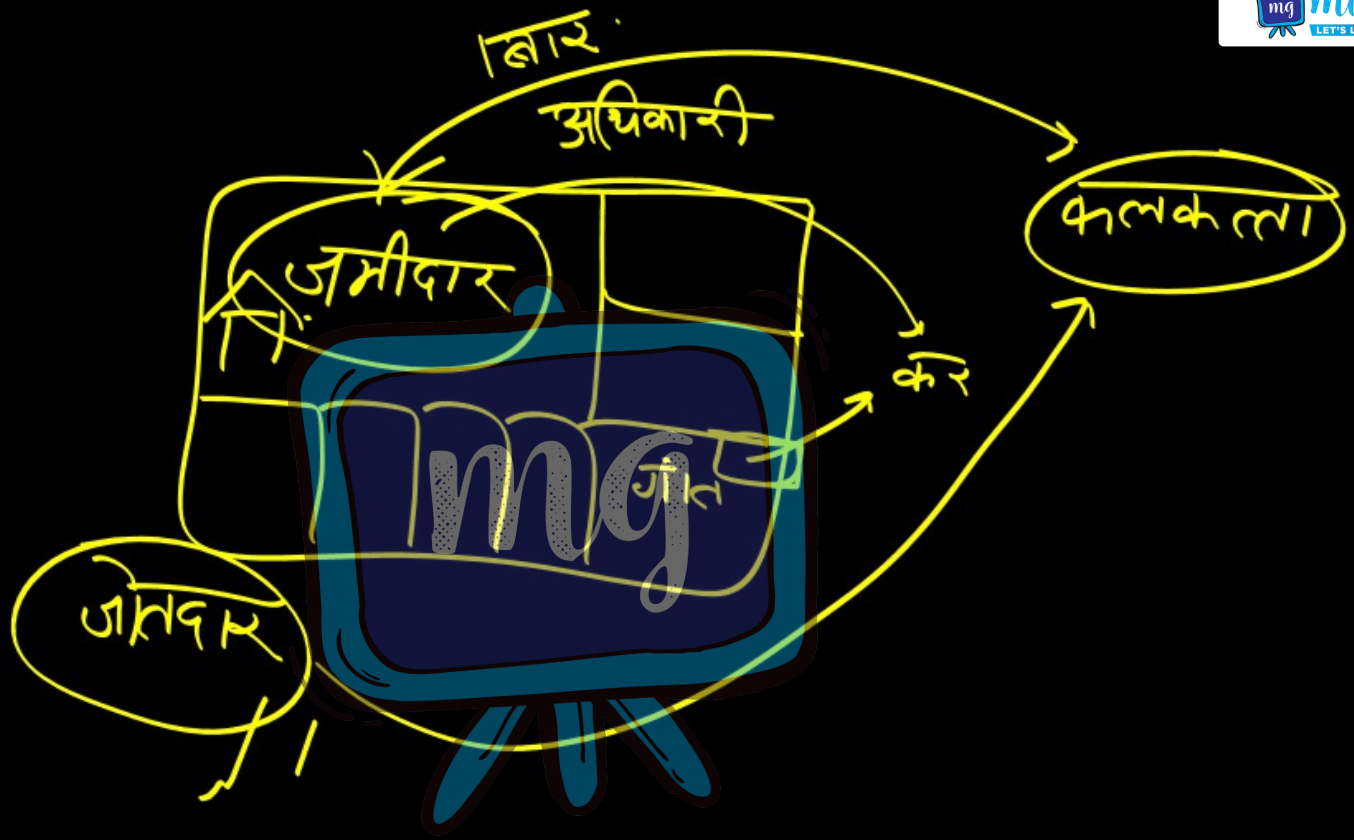
बिहार
अधिकारी
कलकत्ता
जमींदार
कर
जोतदार

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

जोतदारों का उदय

- जोतदार – धनी किसानों का समूह



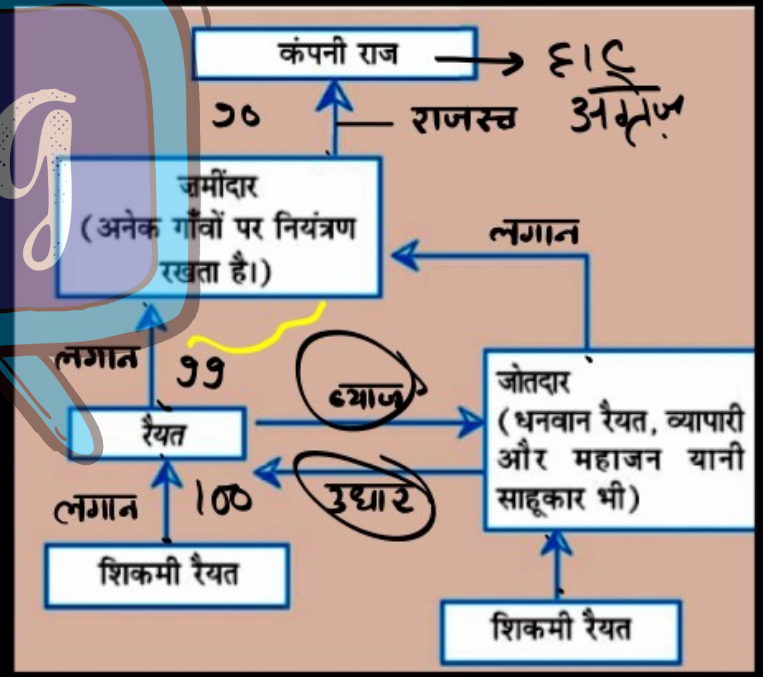

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

MCQ.

V.S

अतिलघु०

'राजा' शब्द का प्रयोग अकसर शक्तिशाली ज़मींदारों के लिए किया जाता था।

'ताल्लुकदार' का शब्दिक अर्थ है वह व्यक्ति जिसके साथ ताल्लुक़ यानी संबंध हो। आगे चलकर ताल्लुक़ का अर्थ क्षेत्रीय इकाई हो गया।

'रैयत' शब्द का प्रयोग अंग्रेज़ों के विवरणों में किसानों के लिए किया जाता था (अध्याय-8)। बंगाल में रैयत ज़मीन को खुद काश्त नहीं करते थे, बल्कि 'शिकमी-रैयत' को आगे पट्टे पर दे दिया करते थे।

बेनामी का शाब्दिक अर्थ 'गुमनाम' है, हिंदी तथा कुछ अन्य भारतीय भाषाओं में इस शब्द का प्रयोग ऐसे सौदों के लिए किया जाता है जो किसी फ़र्जी या अपेक्षाकृत महत्त्वहीन व्यक्ति के नाम से किए जाते हैं और उनमें असली फ़ायदा पाने वाले व्यक्ति का नाम नहीं दिया जाता।

लठियाल, का शाब्दिक अर्थ है वह व्यक्ति जिसके पास लाठी या डंडा हो। ये ज़मींदार के लठैत यानी डंडेबाज पक्षधर होते थे।

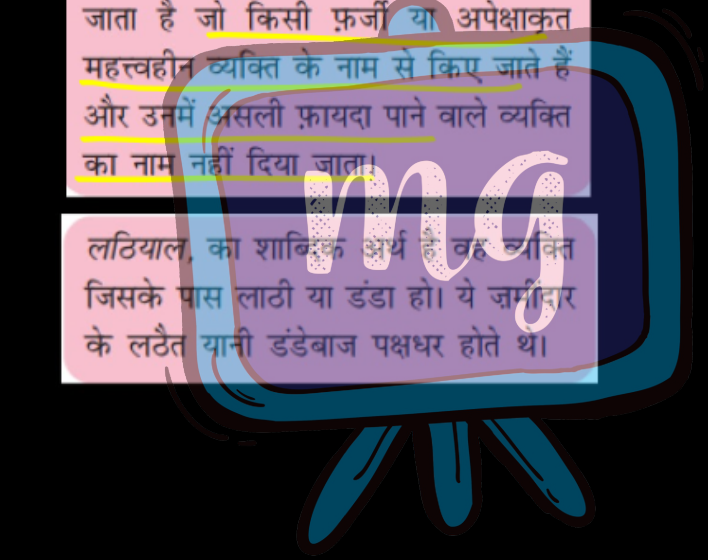

अंग्रेज

बर्दवान

नीलाम

बेनामी

नकली

राजा।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

mg missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

Q. शिकमी रैयत

Q. जोतदारो का उदय ?

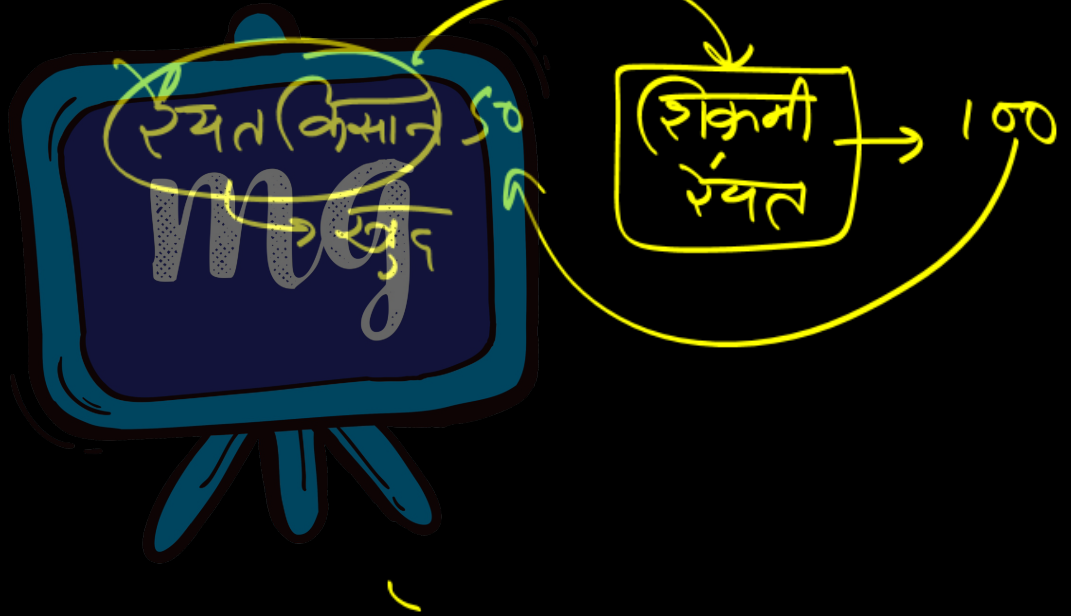

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

दिनाजपुर के जोतदार

बुकानन ने बताया है कि उत्तरी बंगाल के दिनाजपुर जिले के जोतदार किस प्रकार जमींदार के अनुशासन का प्रतिरोध और उसकी शक्ति की अवहेलना किया करते थे :

भूस्वामी इस वर्ग के लोगों को पसंद नहीं करते थे, लेकिन यह स्पष्ट है कि इन लोगों का होना बहुत जरूरी था क्योंकि इनके बिना, जरूरतमंद काश्तकारों को पैसा उधार कौन देता...

जोतदार, जो बड़ी-बड़ी ज़मीनें जोतते हैं, बहुत ही हठीले और जिद्दी हैं और यह जानते हैं कि ज़मींदारों का उन पर कोई वश नहीं चलता। वे तो अपने राजस्व के रूप में कुछ थोड़े से रुपये ही दे देते हैं और लगभग हर किस्त में कुछ-न-कुछ बकाया रक़म रह जाती है। उनके पास उनके पट्टे की हकदारी से ज़्यादा ज़मीनें हैं। ज़मींदार की रक़म के कारण, अगर अधिकारी उन्हें कचहरी में बुलाते थे और उन्हें डराने-धमकाने के लिए घंटे-दो-घंटे कचहरी में रोक लेते हैं तो वे तुरंत उनकी शिकायत करने के लिए फ़ौजदारी थाना (पुलिस थाना) या मुन्सिफ़ की कचहरी में पहुँच जाते हैं और कहते हैं कि ज़मींदार के कारिंदों ने उनका अपमान किया है। इस प्रकार राजस्व की बक़ाया रक़मों के मामलें बढ़ते जाते हैं और जोतदार छोटे-छोटे रैयत को राजस्व न देने के लिए भड़काते रहते हैं...

➲ यह बताइए कि *जोतदार* ज़मींदारों की सत्ता का किस प्रकार प्रतिरोध किया करते थे।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

बुकानन कौन था?

फ्रांसिस बुकानन एक चिकित्सक था जो भारत आया और बंगाल चिकित्सा सेवा में (1794 से 1815 तक) कार्य किया। कुछ वर्षों तक, वह भारत के गवर्नर जनरल लार्ड वेलेज़्ली का शल्य-चिकित्सक रहा। कलकत्ता (वर्तमान में कोलकत्ता) के अपने प्रवास के दौरान उसने कलकत्ता में एक चिड़ियाघर की स्थापना की, जो कलकत्ता अलीपुर चिड़ियाघर कहलाया। वे थोड़े समय के लिए वानस्पतिक उद्यान के प्रभारी रहे। बंगाल सरकार के अनुरोध पर उन्होंने ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के अधिकार क्षेत्र में आने वाली भूमि का विस्तृत सर्वेक्षण किया। 1815 में वह बीमार हो गए और इंग्लैण्ड चले गए। अपनी माता की मृत्यु के पश्चात् वे उनकी जायदाद के वारिस बने और उन्होंने उनके वंश के नाम 'हैमितटन' को अपना लिया। इसलिए उन्हें अकसर बुकानन-हैमितटन भी कहा जाता है।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

परिवर्तन ⟶ रिपोर्ट ⟶ 1813 संसद प्रस्तुत

↓

— पाचवी रिपोर्ट

- कलेक्टरों की रिपोर्ट
- राजस्व संबंधित तालिकाएं
- जमींदार, रैयत अर्जियां
- प्रशासन की टिप्पणियाँ

पाँचवी रिपोर्ट

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

पाँचवीं रिपोर्ट से उद्धृत

ज़मींदारों की हालत और ज़मीनों की नीलामी के बारे में पाँचवीं रिपोर्ट में कहा गया है :

राजस्व समय पर नहीं वसूल किया जाता था और काफ़ी हद तक ज़मीनें समय-समय पर नीलामी पर बेचने के लिए रखी जाती थीं। स्थानीय वर्ष 1203, तदनुसार सन् 1796-97 में बिक्री के लिए विज्ञापित ज़मीन की निर्धारित राशि (जुम्मा) 28,70,061 सिक्का रु. थी और वह वास्तव में 17,90,416 रु. में बेची गई और 14,18,756 रु. की राशि जुम्मा के रूप में प्राप्त हुई। स्थानीय संवत 1204, तदनुसार सन् 1797-98 में 26,66,191 सिक्का रु. के लिए ज़मीन विज्ञापित की गई, 22,74,076 सिक्का रु. की ज़मीन बेची गई और क्रय राशि 21,47,580 सिक्का रु. थी। बक़ीदारों में कुछ लोग देश के बहुत पुराने परिवारों में से थे। ये थे : नदिया, राजशाही, विशनपुर (सभी बंगाल के जिले) आदि के राजा...। साल दर साल उनकी जागीरों के टूटते जाने से उनकी हालत बिगड़ गई। उन्हें ग़रीबी और बरबादी का सामना करना पड़ा और कुछ मामलों में तो सार्वजनिक निर्धारण की राशि को यथावत बनाए रखने के लिए राजस्व अधिकारियों को भी काफ़ी कठिनाइयाँ उठानी पड़ीं।

➲ जिस लहजे में साक्ष्य अभिलिखित किया गया है, उससे आप रिपोर्ट में वर्णित तथ्यों के प्रति रिपोर्ट लिखने वाले के रुख़ के बारे में क्या सोचते हैं? आंकड़ों के ज़रिये रिपोर्ट में क्या दर्शाने की कोशिश की गई है? क्या इन दो वर्षों के आंकड़ों से आपके विचार से, किसी भी समस्या के बारे में दीर्घकालीन निष्कर्ष निकालना संभव होगा?

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



फ्रांसिस बुकानन

बड़ी खतरनाक जगह !

बंगाल
(गीली जमीन)
(स्थायी कृषि)

राजमहल पहाड़ियां
(सूखी जमीन)
(सम कृषि)

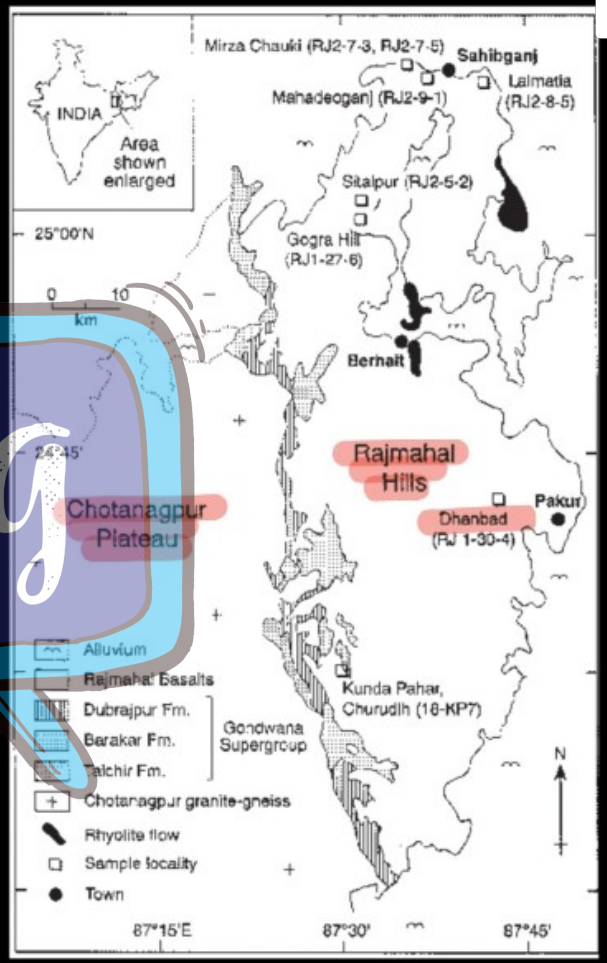

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

राजमहल

पहाड़िया

- खेती
- वन उपज - झूम
- चारागाह

अंग्रेजों - कटाई → कृषि विस्तार

- व्यापारी → रास्ते (इजाज़त)
- ज़मींदार (स्वराज) → कर

1770 - निर्मम नीति

1790 - क्लीवलैण्ड → जंगल नीति

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

शांति नीति

मुखिया - मुत्ता

चाल - चलन ठीक रखो

परिवर्तन

जंगल → सफाई : संथाल

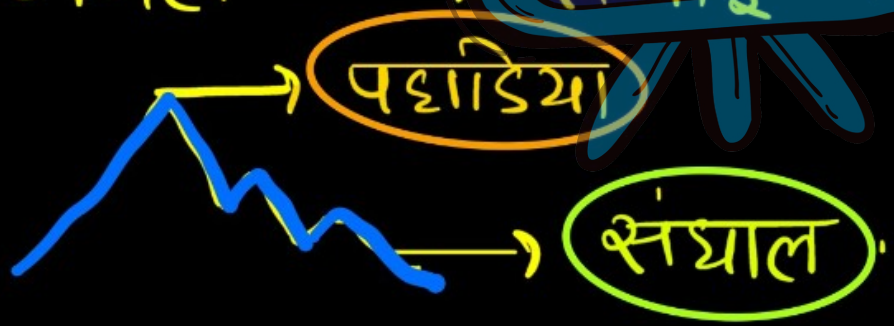

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

1780- संथाल बंगाल आगमन

ब्रिटिश

- संथाल ✓ → आदर्श कृषक
- पहाड़िया ✗ → काबू में नहीं

1832 - "दामिन इ कोह" → संथालो की भूमि घोषित

संथालो के गांवो को बढ़ोतरी

→ संथाल भी परेशान ??

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

साहूकार —ब्याज→ संथाल ←राजस्व— सरकार

(दिकू)

1855 - संथाल विद्रोह



परगना

(भागलपुर + बीरभूम)

→ विशेष कानून







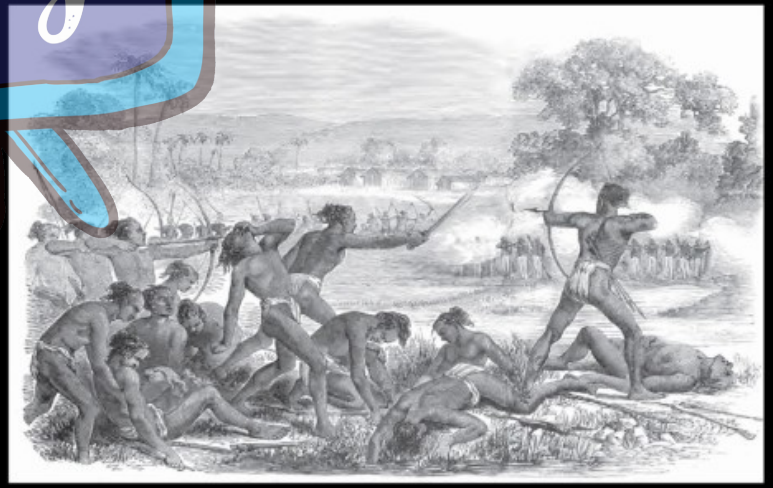

सिधू मांसी



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

2. कुदाल और हल

कुदाल : पहाड़िया लांगों के जीवन का प्रतीक

हल : नए बाशिदों (संथाल) की शक्ति का प्रतीक

- राजमहल की पहाड़िया – झारखण्ड
  ↓
- यहां पहाडिया लोग रहते थे।
  ↓
- झूम खेती करते थे। → रेशम कोया, लकडी - काठकोयल, चारगाह
  ↓
- अंग्रेजों के द्वारा कृषि भूमि का विस्तार किया गया।
  ↓
- ज्यों – ज्यों स्थायी कृषि का विस्तार होता गया जंगलों व चारागाहों का क्षेत्र संकुचित होता गया।

झूम खेती

पेड - पौधों को काटकर जला दिया जाता है।
↓
उर्वर —— खेती
↳ परती छोड़ दिया जाता है।

- पहाड़ी लोगों और स्थायी खेतीहरों के बीच झगड़ा तेज होता गया।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

संथाल – अगुआ बाशिंदे

संथाल विद्रोह :- 1855-56

- संथाल लोग 1780 के आस-पास बंगाल में आने लगे थे।

↓

- संथाल मुख्यतः कृषक थे।

↓

- जमींदार लोगों ने नयी कृषि भूमि तैयार करने और कृषि क्षेत्र का विस्तार करने के लिए इन्हें आमंत्रित किया।

↓

- 1832 तक, जमीन के एक काफी बड़े इलाके को ''दामिन-ए-कोह'' के रूप में सीमांकित कर दिया गया।

↓

दामिन-ए-कोह - यह भागलपुर से राजमहल तक का वन क्षेत्र था।

ब्रिटिश सरकार द्वारा दामिन-ए-कोह का निर्माण संथाल समुदाय को बसाने के लिए किया गया था।

↓

सरकार (राज्य) ने भारी कर लगाए।

↓

साहूकार (दिकू) लोग संथालों की जमीन हड़प लेते थे।

संथाल विद्रोह हुआ - 1855-56

नेता - सिधू मांझी

प्रतीक - हल





RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

संथालों के बारे में बुकानन के विचार

नयी ज़मीनें साफ़ करने में वे बहुत होशियार होते हैं लेकिन नीचता से रहते हैं। उनकी झोपड़ियों में कोई बाड़ नहीं होती और दीवारें सीधी खड़ी की गई छोटी-छोटी सटी हुई लकड़ियों की बनी होती हैं जिन पर भीतर की ओर लेप (पलस्तर) लगा होता है। झोपड़ियाँ छोटी और मैली-कुचैली होती हैं; उनकी छत सपाट होती हैं, उनमें उभार बहुत कम होता है।

कड़ुआ के पास की चट्टान

बुकानन की पत्रिका निम्नलिखित ऐसे प्रेक्षणों से भरी पड़ी है:

> आगे लगभग एक मील चलने के बाद में (मैं) चट्टानों के एक शिलाफलक पर आ गया; जिसका कोई यह एक छोटा दानेदार ग्रेनाइट है जिसमें लाल-लाल फेल्डस्पार, क्वार्ट्ज़ और काला अबरक लगा है... वहाँ से आधा मील से अधिक की दूरी पर मैं एक अन्य चट्टान पर आया वह भी स्तरहीन थी और उसमें बारीक दानों वाला ग्रेनाइट था जिसमें पीला-सा फेल्डस्पार, सफ़ेद-सा क्वार्ट्ज और काल, अबरक था।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

वनों की बटाई और स्थायी कृषि के बारे में

निचली राजमहल की पहाड़ियों में एक गाँव से गुजरते हुए, बुकानन ने लिखा:

इस प्रदेश का दृश्य बहुत ही बढ़िया है; यहाँ की खेती विशेष रूप से, घुमावदार संकरी घाटियों में धान की फ़सल, बिखरे हुए पेड़ों के साथ साफ़ की गई जमीन, और चट्टानी पहाड़ियाँ सभी अपने आप में पूर्ण हैं, कमी है तो बस इस क्षेत्र में कुछ प्रगति की और विस्तृत तथा उन्नत खेती की, जिनके लिए यह प्रदेश अत्यंत संवेदनशील है। यहाँ लकड़ी की जगह टसर और लाख के लिए आवश्यकतानुसार बड़े-बड़े बागान लगाए जा सकते हैं; बाक़ी जंगल को भी साफ़ किया जा सकता है, और जो भाग इस प्रयोजन के लिए उपयुक्त न हो वहाँ पनई ताड़ और महुआ के पेड़ लगाए जा सकते हैं।